श्री मद्भगवद गीता के अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

*डॉ. सुशीला सारस्वत

भारत के योगशील जीवन, संयमित आहार–विहार बौद्धिक ऋचाओं और गीता के उपदेशों को भौतिक विकास के शिखर पर पहुँचे देशों के लोग भी अब ग्रहण करने लगे है और विश्व मानवता की पीड़ा को दूर करने के लिये भारतीय एकात्म भाव तथा अध्यात्म की गंगा प्रवाहित की जाने लगी है। अधिकांश देशों के पूर्वजों ने कोई ऐसा ज्ञान का शाश्वत खजाना नही रख छोड़ा है जिसके आधार पर अपने भौतिक विकास का संतुलन बनाये रखकर वे सच्चे अर्थों में जीवन प्राप्त कर सकें। विश्व मानवता को संकटों व दुखों से निवृत्ति प्रदान करने में गीता के वैचारिक भाव व इसकी शिक्षा किस प्रकार वर्तमान काल में प्रासंगिक है इसका आलोचनात्मक अध्ययन करना शोधिका आवश्यक एवं अनिवार्य समझती है। एतदर्थ प्रस्तुत अध्ययन वरण किया गया है।

भारत भूमि या पाश्चात्य देशों की भूमि पर भौतिक सम्पन्नता का लक्ष्य प्राप्त कर लेना ही सब कुछ नही है। भौतिकता से सम्पन्न देशों में भी अब उस 'परम' की प्राप्ति का अन्वेषण होने लगा है। इस भावधारा को स्त्रोत किसी मजहबी किताब, शिक्षा संस्थान और आश्रमों के व्रतशील जीवनचर्या में नहीं है, वल्कि यह साक्षात् प्रकृति में सर्वत्र व्याप्त है। आज का मानव अप्राकृतिक मार्ग पर भाग रहा है। वह वात्सल्य, स्नेह, प्रेम की भावधारा से कटता जा रहा है। उसमें पारिवारिक बोध का अभाव पाया जा रहा हैं जिसके कारण आज की संताने भी असंतुलित हो रही है। उनके देह, मन और आत्मभाव का सम्यक् विकास नहीं हो पा रहा है। इसका कारण यह है कि जीवन में रमने वाली, पालने पोसने वाली मानवीय संवेदनाओं को आधुनिक भौतिकतावाद ने इतने निम्न स्तर पर उतार दिया है कि इसका आनन्द समाप्त हो गया है। विश्व जीवन के कलेशों को दूर करने के लिये श्री मद्भगवद् गीता में निहित प्रकृति और धर्म निःसृत वात्सल्य ही सर्वोपरि है। गीता के वैचारिक भावों में समदृष्टि और संघर्ष शून्य समरसता का निवास है। सम्यक् परिवर्तन, सुख–शान्ति और समृद्धि की प्राप्ति का गीता के द्वारा प्रदर्शित विचार का अवलम्वन लेना ही एक मात्र उपयुक्त मार्ग हैं अतः गीता में निहित विचारों का अनुशीलन व अवगाहन आवश्यक है।

भारतीय जीवन के अनुसार जीवन की सार्थकता जीवन को सुसंयत करके उसे भगवानोन्मुख बनाने में है,

जिससे हम इस क्षुद, अल्पकालीन अस्थायी, भौतिक जीवन से उठकर महान शाश्वत एवं असीम, अनन्त जीवन को प्राप्त कर सके। हम भारतीयों की दृष्टि में किसी ग्रन्थ की आवश्यकता एवं उपादेयता इस बात पर निर्भर करती है कि वह हमें जीवन के चरम और परम लक्ष्य तक ले जाने में सहायक हो। इस दृष्टि से विचार करने पर हमें ज्ञात होता है कि श्री मद्भगवद् गीता का एकमात्र अनुशीलन ही मानव मात्र को लक्ष्य की प्राप्ति करा देने में सबसे अधिक सहायक उपयोगी तथा स्वयं सिद्ध सबल साधन के रूप में खरा उतरता है। अतः किस प्रकार गीता मनुष्य मात्र के लिए उपयोगी है यह अध्ययन करना अति आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

श्री मद्भगवद् गीता की महिमा अगाध और असीम है। इसमें समस्त मानवों के लिए उपयोगी एवं लाभप्रद सामग्री उपस्थित हैं, चाहे वह किसी भी देश, समुदाय सम्प्रदाय, वर्ण अथवा आश्रम का ही व्यक्ति क्यों न हो। इसका कारण यह है कि इसमें वास्तविक तत्वों का वर्णन एवं कर्म की प्रधानता है जो आज के समाज की महती आवश्यकता है। इसलिये इसमें शिक्षा दर्शन का महत्वपूर्ण पहलू नैतिक एवं सामाजिक दर्शन हैं जीवन के विभिन्न पहलू जैसे राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, कूटनीति, वर्णाश्रम, शुद्ध आचरण, दान, तप, कर्त्तव्य एवं अधिकार की अति आवश्यक बाते है जिन्हें जानना अति महत्वपूर्ण है। अतः इस हेतु प्रस्तुत अध्ययन आवश्यक है गीता में समभाव, दयाभाव, सेवा भाव, त्याग, सहानुभूति, सुख, सत्य, अंहिसा, अन्तःकरण की शुद्वता, वाणी की सरलता, इन्द्रिय निग्रह, अहंकार रहित होना, गुरू निष्ठा, अनुशासन, लक्ष्य से विचलित न होना आदि बातें कब, कैसे और कहाँ प्रकट हुई, उस तथ्य का अध्ययन करना अति आवश्यक है।

''साम्यवाद एक महत्वपूर्ण दर्शन है, परन्तु गीता के साम्यवाद और आजकल कहे जाने वाले साम्यवाद में बड़ा अन्तर है। आज का साम्यवाद ईश्वर विरोधी है और गीतोक्त साम्यवाद सर्वत्र ईश्वर को देखता है। वह धर्म का नाशक एवं हिसांमय है यह धर्म की पुष्टि करने वाला अहिंसा का प्रतिपादक है।'' इस प्रकार गीतोक्त साम्यवाद व आधुनिक साम्यवाद में उपस्थित अन्तर की खोज करना आवश्यक प्रतीत होता है। सच्चा साम्यवादी कैसा होता है साम्यवाद मानवता का आधार किस प्रकार है इस तथ्य की खोज करने हेतु प्रस्तुत अध्ययन आवश्यक हो जाता है। गीता में समता की बात प्रधान रूप से आयी है आज जब लोग रूढ़िवादी होकर धर्म, जाति–पाति, क्षेत्रवाद के लिये झगड़ा कर रहे हैं तब गीता के दार्शनिक आदर्श को जानना बहुत आवश्यक हो जाता है कि समस्त जीवों के प्रति समता का भाव धारण करने के लिए गीता द्वारा किस प्रकार के आचरण व व्यवहार करने के निर्देश दिये गये है। अतः वर्तमान में गीता के आदर्श को जानने के लिए प्रस्तुत अध्ययन आवश्यक है।

अपराध विद्या लौकिक विद्या है और परा आध्यात्मिक। ये दोनों विधायें मानव कल्याण के लिए अति महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है। गीता में अपरा विद्या द्वारा पर विद्या की प्राप्ति का मार्ग बताया गया है। अतः इस तथ्य

को खोजने हेतु प्रस्तुत शोध आवश्यक है।

गीता के महान आदर्शो को जानना, समझना एवं अंगीकार करना विशेषकर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जबकि भारतीय नवयुवक अपनी सांस्कृतिक धरोहर से विलग होकर पाश्चात्य सभ्यता के पीछे भाग रहे हैं अति आवश्यक हैं अतएव प्रस्तुत अध्ययन इस हेतु भी अति आवश्यक है कि जिससे नवयुवक गीता के आदर्श का अनुकरण एवं आचरण करने के लिए प्रेरित हो सकें।

भारत की वर्तमान में पीढ़ी को श्री मद्भगवद गीता द्वारा जीवन के आदर्शों एवं शिक्षाओं से अवगत कराने हेतु प्रस्तुत अध्ययन अति आवश्यक है ताकि भारतीय नवयुवकों का भविष्य उज्जवल हो सकें।

***व्याख्याता**
हिन्दी विभाग
बी.बी. डी राजकीय महाविद्यालय
चिमनपुरा, शाहपुर (राज.)

संदर्भ

1. विश्वम्भर नाथ उपाध्याय, पिछले दशक की वेन आंचलिक उपन्यास, साहित्य सन्देश (जनवरी, फरवरी, 1988, पृ. 36)
2. कृष्णा सोबती, मित्रों मरजानी, क्लैशपर
3. हिन्दी आलोचक और आज की कहानी पृ. 31
4. गीता सोलंकी, नारी चेतना और कृष्णा सोबती के उपन्यास पृ. 86
5. कृष्णा सोबती कृष्णा बलदेव वेद सोवती वेद पृ. 97
6. डॉ. कुमारी मीना कृष्णा का रचना संसार पृ. 108
7. डॉ. कुमारी मीना कृष्णा वही पृ. 106
8. कृष्णा सोबती, डार से बिछुड़ी पृ. 18
9. कृष्णा सोबती, डार से बिछुड़ी, पृ. 91
10. कृष्णा सोबती, ये लड़की, पृ. 65